मूल्य १०.०० रूपया

तित्थयर

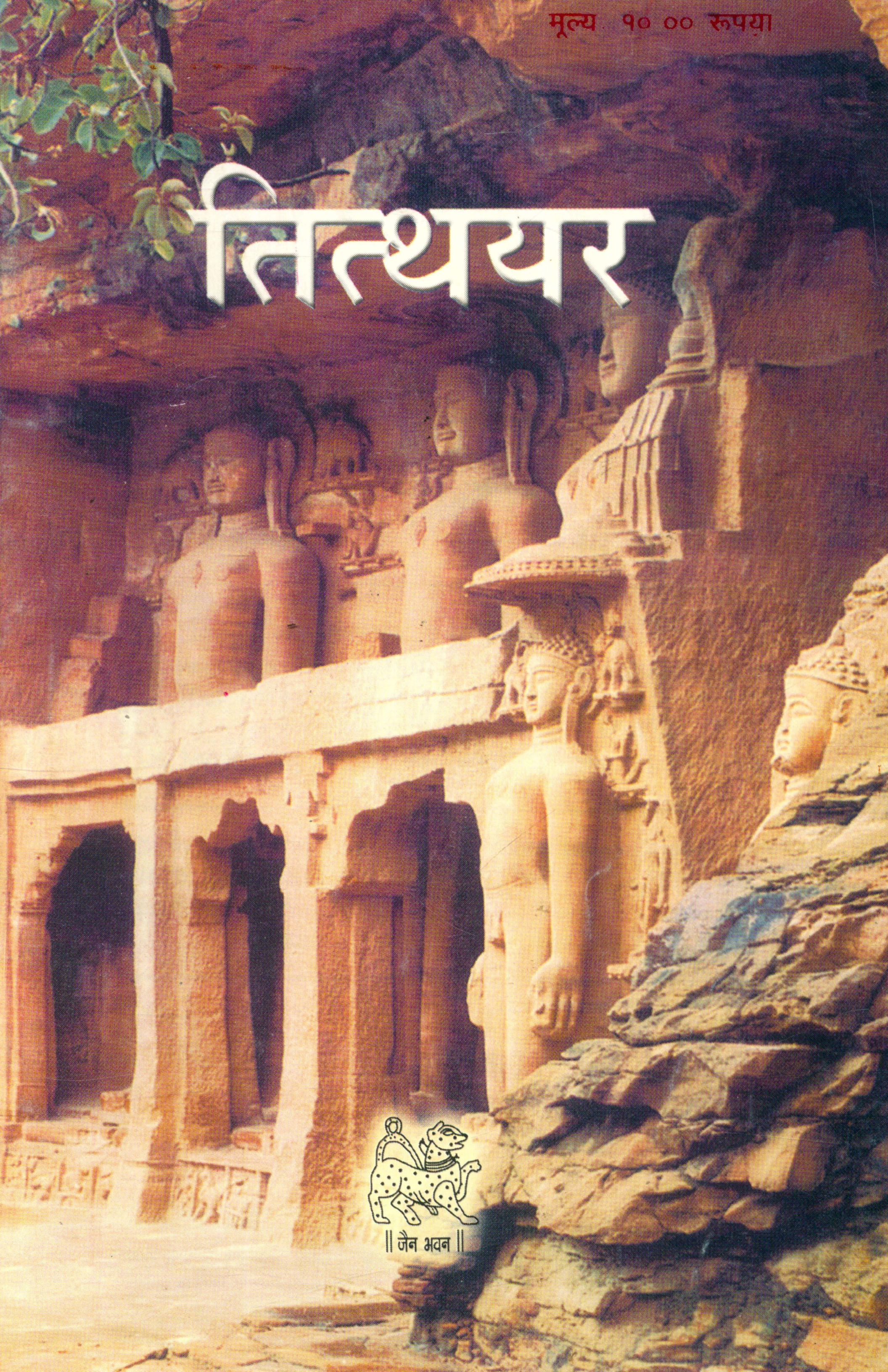

॥ जैन भवन ॥

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३० अंक - ०३, जून २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	स्याद्वादमञ्जरी	साहित्य वाचस्पति म. विनयसागरजी	१०९
२.	जिनवाणी	श्री हरिसत्य भट्टाचार्य	१२३
३.	सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**)	आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.	१२९

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

स्याद्वादमञ्जरी

साहित्य वाचस्पति म. विनयसागरजी

द्वात्रिंशिका का वर्ण्य विषय :

इसमें मुख्यतः परमक्षदूषण ही बताये गये हैं। प्रथम तीन श्लोकों में केवल ज्ञानी भगवान् की स्तुति करके उनके ४ अतिशय बतलाये हैं– १. ज्ञानातिशय, २. अपायापगमातिशय, ३. वचनातिशय और ४. पूजातिशय। इसमें ज्ञान के साथ चारित्र का भी महत्व बतलाया गया है। "सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः" बतलाकर आचार्य ने यथार्थवाद को प्रतिष्ठित किया है। जैन दर्शन अनन्त रूपों से सत्य का दर्शन कराता हुआ यथार्थवाद पर प्रतिष्ठित है। इसके श्लोक ४ से ९ तक में वैशेषिक दर्शन की आलोचना की गई है। सामान्य विशेष का सिद्धान्त प्रतिपादित कर एक ही सत्य के भिन्न-भिन्न अस्वथा स्वरूप बताये हैं। इस जगत का कोई कर्ता है, वह एक है, सर्वव्यापी है, स्वतन्त्र है, नित्य है-जिन नैयायिकों की इस प्रकार की दुराग्रहरूपी विडम्बनाएँ हैं, हे जिनेन्द्र! तुम उनके उपदेशक नहीं हो। नित्य-अनित्य स्याद्वाद के ही रूप है।" इस प्रकार हेमचन्द्र के मत से वैशेषिक दर्शन में भी अनेकान्तवाद स्थित है। चित्ररूप भी एक रूप का ही प्रकार है। ईश्वर शासक भले ही हो सकता है, किन्तु निर्माता नहीं। हेमचन्द्र ने समवायवृत्ति की आलोचना की और सत्ता, चैतन्य एवं आत्मन्, का भी खण्डन किया है। उन्होंने विभुत्व की भी आलोचना की है। उनके अनुसार आत्मा सावयव और परिणामी है, वह समय समय पर बदलती रहती है। १०वें श्लोक में न्याय दर्शन की आलोचना है। श्लोक।। तथा १२ में पूर्व मीमांसा की कड़ी आलोचना है। कर्मकाण्ड के अन्तर्गत हिंसा का जो विधान किया गया है, उसकी तीव्र आलोचना है। "हिंसा चेत धर्म हेतु कथम्? धर्महेतुश्चेद्,

हिंसाकथम्? स्वपुत्रधातात् नृपतित्वलिप्सा!" टीकाकार मल्लिषेण व्यंग्य से कहते हैं यदि हिंसा है, तो धर्म हेतु कैसा, तथा धर्म हेतु है, तो हिंसा कैसी? क्या अपने पुत्र की हत्या करके कोई नृपत्व चाहेगा? उसी प्रकार अपौरुषेयवाद का भी उन्होंने खण्डन किया है। श्लोक १३-१४ में वेदान्त की आलोचना की गई है। यदि माया है तो द्वैतसिद्धि अर्थात् माया और ब्रह्म दोनों की सत्ता सिद्ध है। यदि माया का अस्तित्व ही नहीं है, तो प्रपंच कैसा? माता भी हे और वन्ध्या भी है, यह असम्भव है। श्लोक १५ में सांख्यदर्शन का खण्डन है। चेतन-तत्त्व और जड़-प्रकृति का संयोग यदृच्छा से कैसे सम्भव है? श्लोक १६, १७, १८, और १९ में हेमचन्द्र ने बौद्ध-दर्शन की आलोचना की है। बौद्धों के क्षणिकवाद् की आलोचना करते हुए आचार्य जी कहते हैं कि १. किये गये कर्म का नाश, २. नहीं किये हुए कर्म का फल, ३. संसार का विनाश, ४. मोक्ष का विनाश, ५. स्मरण-शक्ति का भंग हो जाना इत्यादि दोषों की उपेक्षा करके जो क्षणिकवाद मानने की इच्छा करता है वह विपक्षी बड़ा साहसी होना चाहिए। श्लोक २० में प्रत्यक्ष प्रमाणवादी चार्वाक की आलोचना की गयी है। बिना अनुमान के हम सांप्रत-काल में भी बोल नहीं सकते। श्लोक २१ से ३० तक में हेमचन्द्र जी ने जैन दर्शन को प्रतिष्ठित किया है। उसमें विशेषतः सत्य का अनेक विधस्वरूप, उत्पाद, व्यय, धौव्य, सप्तभंगी, स्याद्वाद, नयवाद, आत्माओं की अनेकता का प्रतिपादन किया है। अन्त में जैन दर्शन के व्यापकत्व के विषय में प्रतिपादन किया है। अन्त में दर्शन के व्यापकत्व के विषय में बतलाते हुए हेमचन्द्र कहते हैं कि जिस प्रकार दूसरे दर्शनों के सिद्धान्त एक दूसरे को पक्ष व प्रतिपक्ष बनाने के कारण मत्सर से भरे हुए हैं, उस प्रकार का अर्हन् मुनि का सिद्धान्त नहीं है ; क्योंकि यह सारे नयों को बिना भेद-भाव के ग्रहण कर लेता है। श्लोक ३१ तथा ३२ में भगवान महावीर की स्तुति कर उपसंहार किया गया है।

टीकाकार मल्लिषेणसूरि :

मल्लिषेण नामक प्रमुखतया तीन जैनाचार्यों के जैन साहित्य में उल्लेख प्राप्त होते है ; जिसमें से दो दिगम्बर विद्वान हैं और तीसरे स्याद्वादमंजरीकार

मल्लिषेणसूरि श्वेताम्बर विद्वान हैं। इनके सम्बन्ध में इस ग्रन्थ की प्रशास्तिगत जानकारी के अतिरिक्त अन्य कोई ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त नहीं हैं। टीकाप्रशस्ति से इतना ही ज्ञात होता है कि—नागेन्द्रगच्छीय श्री उदयप्रभसूरि के शिष्य मल्लिषेणसूरि ने शक संवत् १२१४ वि. सं. १३४९ ई. स. १२९३ दीपमालिका के दिन श्री जिनप्रभसूरि[१] की सहायता से चातुर्विध कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य रचित अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका पर स्याद्वादमंजरी नामक टीका की रचना की है।[१]

प्रशस्ति में नागेन्द्रगच्छीय उदयप्रभसूरि का उल्लेख होने से इनकी विश्रुत गुरू-परम्परा की विस्तृत जानकारी प्राप्त हो जाती है। उदयप्रभसूरि ने विश्वविश्रुत जैन मन्दिर लूणिगवसही, आबू के निर्माता महामात्य वस्तुपाल तेजपाल के धार्मिक/सुकृत्य कृत्यों के वर्णनरूप धर्माभ्युदय महाकाव्य की १५ सर्गों में रचनी की है। महामात्य वस्तुपाल द्वारा स्वयं लिखित १२९० की ताड़पत्रीय प्रति प्राप्त होने से इसका रचना समय १२७७-१२९० के मध्य का है। धर्माभ्युदय काव्य की प्रशस्ति में उदयप्रभ ने अपनी जो गुरु-परम्परा दी है, वह इस प्रकार है :—

महेन्द्रसूरि
शान्तिसूरि

आनन्दसूरि	अमरचन्द्रसूरि
हरिभद्रसूरि	
विजयसेनसूरि	
उदयप्रभसूरि	

---

१. श्री जिनप्रभसूरि खरतरगच्छ की लघु शाखा के आचार्य थे। इनका समय लगभग १३२६ से १३९३ है। महाप्रामाणिक एवं चमत्कारी तथा उद्भट्ट विद्वान थे। मुहम्मद तुगलक के प्रतिबोधक एवं गुरु थे। इनकी विविध तीर्थकल्प आदि अनेकों कृतियां प्राप्त हैं। इनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिये मेरी पुस्तक—शासन प्रभावक आचार्य जिनप्रभ और उनका साहित्य देखें।

इस परम्परा के सम्बन्ध में जो कुछ ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है, वह निम्न है :-

तत्कालीन समय में नागेन्द्रगच्छ एक प्रमुख गच्छों में से था। इस गच्छ का प्रमुख गढ़/स्थान था - अणहिल्लपुर पाटण का वनराजविहार अर्थात् पंचासर पार्श्वनाथ का मन्दिर; जो अणहिल्लपुर पाटण के संस्थापक वनराज चावड़ा द्वारा निर्मित था।

महेन्द्रसूरि के प्रशिष्य और शान्तिसूरि के शिष्य आनन्दसूरि और अमरचन्द्रसूरि उद्भट्ट विद्वान थे एवं सिद्धराज जयसिंह की राज्यसभा के सम्मानित विद्वान भी। जयसिंह ने इन दोनों को क्रमशः व्याघ्रशिशुक एवं सिंहशिशुक की उपाधि दी थी। इनके द्वारा निर्मित सिद्धान्तार्णव ग्रन्थ माना जाता है। डॉ. सतीशचन्द्र विद्याभूषण ने हिस्ट्री आप मिडिवल स्कूल ऑफ इंडियन लोजिक पृ. ४७-४८ में कल्पना की है कि नव्यन्याय निर्माता तार्किक गंगेशोपाध्याय ने तत्वचिन्तामणि में सिंह-व्याघ्र के व्याप्ति लक्षण में इन दो तार्किकों आनन्दसूरि और अमरचन्द्रसूरि का उल्लेख किया हो, ऐसा प्रतीत होता है।

हरिभद्रसूरि-पाटण के वनराजविहार में ही निवास करते थे। ये विशिष्ट रूप से प्रवचनपटु थे। मंत्री वस्तुपाल तेजपाल के पिता मंत्री आसराज के कुलगुरु थे।

विजयसेनसूरि-प्रवचनपटु एवं लेखक भी थे। इनकी 'रेवंतगिरि रासु' अपभ्रंश प्रधान गुजराती भाषा की कृति है जो गुजराती भाषा की दृष्टि से आद्यकालीन कृति के रूप में मानी जा सकती है। आसड़ कवि रचित विवेक मंजरी पर बालचन्द्रसूरि ने वि. सं. १२७८ में टीका की रचना की थी, इसका संशोधन इन्होंने ही किया था।

विजयसेनसूरि महामात्य वस्तुपाल तेजपाल के कुल के विशिष्ट धर्मगुरु थे। यही कारण है कि इन महामात्यों के प्रत्येक धर्मकार्य इन्हीं के निर्देश एवं निश्रा में सम्पन्न हुए थे। महामात्य वस्तुपाल तेजपाल कारित विश्वविख्यात् आबू के नेमिनाथ मन्दिर लुणिगवसही की प्रतिष्ठा वि. सं. १२८७ फाल्गुन वदि ३ को इन्होंने ही की थी। इन्हीं महामात्यों द्वारा निर्मापित गिरनार तीर्थ पर नेमिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा भी वि. सं. १२८८ फाल्गुन शुक्ला १० को और स्तम्भतीर्थ

आदिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा भी सं. १२८१ में इन्होंने करवाई थी। यही कारण है कि लुणिग वसही-आबू की हस्तिशाला में प्रथम हस्ति के पृष्ठ भाग पर आचार्य श्री विजयसेन का नाम अंकित है। विशेष जानकारी के लिये 'अर्बुद प्राचीन जैन लेख संदोह' के लुणिगवसही के लेख एवं 'सुकृतकीर्तिकल्लोलिन्या' वस्तुपाल प्रशस्ति संग्रह का नवम परिशिष्ट देखें।

उदयप्रभसूरि भी महामात्य वस्तुपाल के परम्परागत धर्मगुरु ही थे। इनके सम्बन्ध में पुरातन प्रबन्ध संग्रह के अन्तर्गत वस्तुपाल तेजपाल प्रबन्ध में पृष्ठ ६४ पर लिखा है :-

"वस्तुपाल ने उदयप्रभसूरि के विद्याध्ययन के लिये, ७०० योजन के विस्तार वाले इस देश के किसी भी भाग में रहे हुए समर्थ विद्वानों को बुला-बुलाकर इकट्ठे किये और उनसे उदयप्रभ का विद्याध्यन करवाया।"

उदयप्रभसूरि की निम्नांकित रचनाएं प्राप्त होती है :-

१. सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी रचना सं. १२७७
२. धर्माभ्युदय महाकाव्य रचना सं. १२७७-१२९०
३. उपदेशमाला टीका 'कर्णिका' रचना सं. १२९९ धोलका; इसका संशोधन चन्द्रकुलीय कनकप्रभसूरि ने किया था।
४. आरम्भसिद्धि ज्योतिष, दीक्षा, प्रतिष्ठा आदि मुहूर्त के लिये श्वेताम्बर साधु समाज प्रमुखतया इसी ग्रन्थ का उपयोग करता है।
५. वस्तुपाल स्तुति
६. नेमिनाथ चरित्र संस्कृत
७. कर्मस्तव टिप्पनक

मल्लिषेणसूरि :

उक्त उदयप्रभसूरि के शिष्य थे। इन्होंने स्याद्वादमंजरी की रचना की है। इनकी इस कृति के अतिरिक्त अन्य कोई रचना प्राप्त नहीं है। ये अपने समय के मूर्धन्य विद्वान थे। इनके वैदुष्य एवं असाधारण प्रतिभा का आंकलन स्याद्वादमंजरी

के अध्ययन से ही किया जा सकता है। इनकी बहुमुखी प्रतिभा एवं रचना सौष्ठव पर प्रकाश डालते हुए डॉ. जगदीश चन्द्र जैन ने लिखा है :–

मल्लिषेणसूरि अपने समय के एक प्रतिभाशाली विद्वान थे। मल्लिषेण न्याय, व्याकरण और साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित थे। इन्होंने जैनन्याय और जैन सिद्धान्तों के गम्भीर अध्ययन करने के साथ न्याय-वैशेषिक, सांख्य, पूर्वमीमांसा, वेदान्त और बौद्ध दर्शन के मौलिक ग्रन्थों का विशाल अध्ययन किया था। मल्लिषेण की विषय-वर्णन शैली सुस्पष्ट, प्रसाद गुण से युक्त और हृदयस्पर्शी है। न्याय और दर्शनशास्त्र के कठिन से कठिन विषयों को सरल और हृदयग्राही भाषा में प्रस्तुत कर पाठकों को मुग्ध करने की कला में मल्लिषेण कुशल थे। इसीलिये स्याद्वादमंजरी — मल्लिषेण की एक मात्र उपलब्ध रचना—न्याय का ग्रन्थ कहे जाने की अपेक्षा साहित्य का एक अंश कहा जाता है। यद्यपि रत्नप्रभसूरि की 'स्याद्वादरत्नकहावतारिका' भी साहित्य के ढंग पर ही लिखी गई है, परन्तु 'रत्नाकहावतारिका' में समासों की दीर्घता और अर्थकाठिन्य होने के कारण उसमें भाषा की जटिलता आ गई है। इसलिए एक ओर सम्मतितर्क, अष्टसहस्ती, प्रमेयकमलमार्तण्ठ आदि जैनन्याय के गहन वन में से और दूसरी ओर 'स्याद्वादरत्नाकर', 'स्याद्वादरत्नाकहावतारिका' जैसी विकट और घोर अटवी में से निकलकर 'स्याद्वादमंजरी' को विश्राम करने का सर्वांगसुन्दर आधुनिक पार्क कहा जा सकता है। यहाँ पर प्रत्येक दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धांतों का संक्षेप में सरल और स्पष्ट भाषा में वर्णन किया गया है। उपाध्याय यशोविजयजी ने 'स्याद्वादमंजरी' पर 'स्याद्वातमंजूषा' नाम की वृत्ति लिखी है। स्याद्वादमंजरी का उल्लेख माधवाचार्य ने 'सर्वदर्शन संग्रह' में किया है।

मल्लिषेण हरिभद्रसूरि कि कोटि के सरल प्रकृति के उदार और मध्यस्थ विचारों के विद्वान थे। सिद्धसेन आदि जैन विद्वानों की तरह मल्लिषेण भी सम्पूर्ण जैनेत्तर दर्शनों के समूह को 'जैनदर्शन' प्रतिपादित कर 'अन्धगजन्याय' का उपयोग करते हैं। अन्य दर्शनों के विद्वानों के लिये पशु, वृषभ आदि असभ्य शब्दों का प्रयोग न कर वैदान्तियों को सम्यग्दृष्टि, व्यास को ऋषि, कपिल को परमर्षि, उदयन को प्रामाणिकप्रकाण्ड रूप से उल्लेख करना, तथा

श्वेताम्बर परंपरा के अनुयायी होते हुए भी समंतभद्र, विद्यानन्द आदि दिगम्बर विद्वानों के उद्धरण निःसंकोच भाव से प्रस्तुत करना मल्लिषेण की धार्मिक सहिष्णुता के साथ उनके समदर्शीपने को प्रमाणित करता है। स्याद्वादमंजरी में सर्वज्ञसिद्धी की चर्चा के प्रसंग पर भी मल्लिषेण स्त्री-मुक्ति और केवलिमुक्ति जैसे दिगम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदाय के विवादस्थ प्रश्नों के विषय में मौन रहते हैं, इससे भी प्रतीत होता है कि अन्य दिगम्बर एवं श्वेताम्बर आचार्यों की तरह मल्लिषेण को साम्प्रदायिक चर्चाओं में रस नहीं था। अनेक वृक्षों से पुष्पों को चुनने के समान, अनेक दर्शन संबंधी शास्त्रों से प्रमेयों को चुन-चुनकर, निस्सन्देह मल्लिषेणसूरि ने अकृत्रिमबहुमति स्याद्वादमंजरी नाम की माला गूंथकर जैनन्याय को समलंकृत किया है।

स्याद्वादमंजरी का वर्ण्य विषय :

श्लोक १ से ३ में भगवान महावीर की स्तुति रूप है। इनमें उनके चार मूल अतिशयों - अनन्त विज्ञान से ज्ञानातिशय, अतीतदोष से अपायापगमातिशय, अबाध्यसिद्धान्त से क्वनातिशय, अमर्त्यपूज्य से पूजातिशय सहित भगवान् के यथार्थवाद का प्ररूपण करते हुए प्रमाण पुरस्सर उनके शासन की सर्वोत्कृष्टता प्रतिपादित की गई है।

श्लोक ४-१० इन सात श्लोकों में न्याय-वैशोषिक दर्शन के आचार्यों एवं ग्रन्थों-प्रशस्तपादभाष्य, वैशेषिक सूत्र, किरणावली, न्यायमंजरी, न्यायकन्दली, न्यायवार्तिक, न्यायसार, वात्स्यायन भाष्य, ऐतरेयआरण्यक, तैतिरीयसंहिता, छान्दोग्योपनिषद् आदि के उद्धरणों के साथ उनकी मान्यताओं का पूर्वपक्ष के रूप में उल्लेख करते हुए प्रमाण पुरस्सर उनका निरसन किया गया है। उनके जिन सिद्धान्तों पर विचार किया गया है, वे हैं :-

१. सामान्य और विशेष भिन्न पदार्थ नहीं है।

२. वस्तु को एकान्त-नित्य अथवा एकान्त-अनित्य मानना न्यायसंगत नहीं है।

३. एक, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, स्वतंत्र और नित्य ईश्वर जगत का कर्ता नहीं हो सकता।

४. धर्म-धर्मी में समवाय संबंध नहीं बन सकता।

५. सत्ता सामान्य भिन्न पदार्थ नहीं है।

६. ज्ञान आत्मा से भिन्न नहीं है।

७. आत्मा के वृद्धि आदि गुणों के नाश होने को मोक्ष नहीं कह सकते।

८. आत्मा सर्वव्यापक नहीं हो सकती।

९. छल, जाति, निग्रहस्थान आदि तत्त्व मोक्ष के कारण नहीं हो सकते।

तथा—

क) तम अन्धकार अभावरूप नहीं है, वह आकाश की तरह स्वतन्त्र द्रव्य है और पौद्गलिक है।

ख) अप्रच्युत, अनुत्पन्न और सदास्थिरत्व नित्य का लक्षण मानना ठीक नहीं। पदार्थ के स्वरूप का नाम नहीं होता ।

ग) किरणें गुण रूप नहीं है, उन्हें तेजस् पुद्गलरूप मानना चाहिये।

घ) नैयायिकों के प्रमाण, प्रमेय आदि के लक्षण दोषपूर्ण हैं।

इसके अतिरिक्त इन श्लोकों में—

अ) जैन दृष्टि से आकाश आदि में नित्यानित्यत्व,

ब) पतंजलि, प्रशस्तपादकार और बौद्धों के अनुसार वस्तुओं का नित्यानित्यत्व।

स) अनित्यैकान्तवादी बौद्धों के क्षणिकवाद में दूषण,

ड) वैदिकसंहिता, स्मृति आदि के वाक्यों में पूर्वापरविरोध, तथा

ह) केवलिसमुद्घात अवस्था में जैनसिद्धांत के अनुसार आत्म-व्यापकता की संगति का प्ररूपण किया गया है।

श्लोक ११ – १२

इन दो पद्यों में पूर्वमीमांसकों द्वारा मान्य मीमांसा-श्लोकवार्तिक, जैमिनीसूत्र, आश्वलायन गृह्यसूत्र, छान्दोग्योधनिषद्, याज्ञवल्क्यादि स्मृतियाँ आदि के उदाहरण देते हुए, उनके निम्न सिद्धान्तों पर अहापोह करते हुए सप्रमाण निरसन किया गया है :—

१. वेदों में प्रतिपादित हिंसा धर्म का कारण नहीं हो सकती।

२. श्राद्ध करने से पितरों की तृप्ति नहीं होती।

३. अपौरुषेय वेद को प्रमाण नहीं मान सकते।

४. ज्ञान को स्वपरप्रकाशक न मानने से अनेक दूषण आते हैं, इसलिये ज्ञान को स्व और परका प्रकाशक मानना चाहिये।

इसके अतिरिक्त इन श्लोकों में—

क) जिनमंदिर के निर्माण करने का विधान,

ख) सांख्य, वेदान्त और व्यास ऋषि द्वारा याज्ञिक हिंसा का विरोध, तथा

ग) ज्ञान को अनुव्यवसायगम्य बनाने वाले न्याय-वैशेषिकों का खंडन किया गया है।

श्लोक १३ – इसमें ऋग्वेद, ईशावास्योपनिषद, वृहदारण्यकोपनिषद्, मीमांसा श्लोकवार्तिक आदि उद्धरणों के आलोक में ब्रह्माद्वैतवादियों के मायावाद का खण्डन किया गया है, और प्रत्यक्ष प्रमाण को विधि एवं निषेध रूप में प्रतिपादित किया है।

श्लोक १४ – इस पद्य में दिङ्नाग, अशोक, वाक्यपदीप, आचारांग आदि के उद्धरंणों के साथ एकान्त सामान्य और एकान्त-विशेष वाच्य-वाचक भाव का निराकरण करते हुए कथंचित् सामान्य और कथंचित् विशेष वाच्यवाचक भाव का समर्थन किया है। इस पद्य में निम्न महत्वपूर्ण विषय भी प्रतिपादित किये हैं :-

१. केवल द्रव्यास्तिकनय अथवा संग्रहनय को मानने वाले अद्वैतवादी, सांख्य और मीमांसकों का सामान्यैकान्तवाद मानना युक्तियुक्त नहीं है।

२. केवल पर्यायास्तिकनय को मानने वाले बौद्धों का विशेषैकान्तवाद ठीक नहीं है।

३. केवल नैगमनय को स्वीकार करने वाले न्याय-वैशेषिकों का स्वतन्त्र और परस्पर निरपेक्ष सामान्य-विशेषवाद मानना ठीक नहीं है।

तथा—

क) शब्द आकाश का गुण नहीं है, वह पौद्‌गलिक है, और सामान्य विशेष दोनों रूप है।

ख) आत्मा भी कदाचित् पौद्गलिक है।

ग) अपोह, सामान्य अथवा विधि को शब्दार्थ नहीं मान सकते।

श्लोक १५- इसमें सांख्यकारिका, सांख्यतत्त्वकौमुदी, वादमहार्णव आदि के आलोक में सांख्यदर्शन की निम्नांकित मान्यताओं की सम्यक् प्रकार से समीक्षा की गई है :-

१. चित्शक्ति पुरुष को ज्ञान से शून्य मानना परस्पर विरुद्ध है।
२. बुद्धि महत् का जड़ मानना ठीक नहीं है। अहंकार को भी आत्मा का ही गुण मानना चाहिये, बुद्धि का नहीं।
३. सत्कार्यवाद मानने वाले सांख्य लोगों का आकाश आदि का पाँच तन्मात्राओं से उत्पत्ति मानना असंगत है।
४. बंध पुरुष को ही मानना चाहिये प्रकृति को नहीं।
५. वाक्, पाणि आदि को पृथक् इन्द्रिय नहीं कह सकते, इसलिये पाँच ही इन्द्रियाँ माननी चाहिये।
६. केवल ज्ञानमात्र से मोक्ष नहीं हो सकता।

श्लोक १६-१९—इन चार पद्यों में न्याय-विन्दु, न्याय-बिन्दु टीका प्रज्ञाकरगुप्त, दिङ्नाग, मोक्षाकरगुप्त, आदि के उद्धरणों के साथ बौद्ध दर्शन की सौत्रान्तिक, वैभाषिक और योगाचार परम्परा मान्य निम्नांकित क्षणिकवाद, शून्यवाद, वासना को सम्यक् प्रकार से परीक्षण कर दूषित सिद्ध किया है :-

१. प्रमाण और प्रमाण के फल को सर्वथा भिन्न न मानकर कदाचित् भिन्नाभिन्न मानना चाहिये।
२. सम्पूर्ण पदार्थों को एकान्त रूप से क्षणध्वंसी न मानकर उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य सहित स्वीकार करना चाहिये।
३. पदार्थों के ज्ञान में तदुत्पति और तदाकारता को कारण न मानकर क्षयोपशमरूप योग्यता को ही कारण मानना चाहिये।
४. विज्ञानवादी बौद्धों का विज्ञानाद्वैत मानना ठीक नहीं है।
५. प्रमाता, प्रमेय आदि प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध होते है। इसलिये माध्यमिक बौद्धों का शून्यवाद युक्तिसंगत नहीं है।

६. बोद्धों के क्षणभंगवाद में अनेक दोष आते हैं, अतः क्षणभंगवाद का सिद्धांत दोषपूर्ण है।

७. क्षणभंगवाद की सिद्धि के लिये नाना क्षणों को परम्परारूप मानना भी ठीक नहीं।

तथा—

क) नैयायिकों के प्रमाण और प्रमिति में एकान्त-भेद नहीं बन सकता।

ख) आत्मा की सिद्धि।

ग) सर्वज्ञ की सिद्धि।

श्लोक २०– इसमें चार्वाक दर्शन की अयुक्त मान्यताओं का निराकरण किया गया है।

श्लोक २१-२९— पूर्वोक्त १७ पद्यों में न्याय-वैशेषिक, योग, पूर्वमीमांसा, अद्वैतवाद, सांख्य, बौद्ध एवं चार्वाक दर्शनों के प्रमुख-प्रमुख सिद्धान्तों/मान्यताओं पर उहापोह एवं समीक्षा करने के पश्चात् इन ९ पद्यों में स्वपक्ष/जैनदर्शन की मान्यताओं की स्थापना/समर्थन करते हुए जैनदर्शन की मौलिक भित्ति स्याद्वाद की सयुक्तिक, सप्रमाण सिद्धि की गई है। साथ ही निम्नांकित सिद्धान्तों का सविस्तार प्रतिपादन किया गया है :–

१. प्रत्येक वस्तु, उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है। द्रव्य की अपेक्षा वस्तु में ध्रौव्य और पर्याय की अपेक्षा सदा उत्पाद और व्यय होता है। उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य परस्पर सापेक्ष हैं।

२. आत्मा, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि सम्पूर्ण द्रव्यों में नाना अपेक्षाओं से नाना धर्म रहते हैं, अतएव प्रत्येक वस्तु को अनन्तधर्मात्मक मानना चाहिये। जो वस्तु अनन्तधर्मात्मक नहीं होती, वह वस्तु सत् भी नहीं होती।

३. प्रमाणवाक्य और नयवाक्य से वस्तु में अनन्त धर्मों की सिद्धि होती है। प्रमाणवाक्य को सकलादेश और नयवाक्य को विकलादेश कहते है। पदार्थ के धर्मों का काल, आत्मरूप, अर्थ, संबंध, उपकार गुणिदेश, संसर्ग और शब्द की अपेक्षा अभेदरूप कथन करना सकलादेश तथा काल, आत्मरूप

आदि की भेदविवक्षा से पदार्थों के धर्मों का प्रतिपादन करना विकलादेश है। स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्तिअवक्तव्य, स्यान्नास्तिअवक्तव्य, और स्यादस्तिनास्तिअवक्तव्य के भेद से सकलादेश और विकलादेश प्रमाणसप्तभंगी और नयसप्तभंगी के सात सात भेदों में विभक्त है।

४. स्याद्वादियों के मत में स्व द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा वस्तु में अस्तित्व और पर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा नास्तित्व है। जिस अपेक्षा से वस्तु में अस्तित्व है, उसी अपेक्षा से वस्तु में नास्तित्व नहीं है। अतएव सप्तभंगी नय में विरोध, वैयधिकरण्य, अनवस्था, संकर, व्यतिकर, संशय, अप्रतिपत्ति और अभाव नामक दोष नहीं आ सकते।

५. द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा वस्तु नित्य, सामान्य, अवाच्य, और सत् है, तथा पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा अनित्य, विशेष, वाच्य और असत् है। अतएव नित्यानित्यवाद, सामान्यविशेषवाद, अभिलाप्यानभिलाप्यवाद तथा सदसद्वाद इन चारों वादों का स्याद्वाद में समावेश हो जाता है।

६. नयरूप समस्त एकांतवादों का समन्वय करने वाला स्याद्वाद का सिद्धान्त ही सर्वमान्य हो सकता है।

७. भावाभाव, द्वैताद्वैत, नित्यानित्य आदि एकांतवादों में सुख-दुःख, पुण्य-पाप, बन्ध-मोक्ष आदि की व्यवस्था नहीं बनती।

८. वस्तु के अनन्त धर्मों में से एक समय में किसी एक धर्म की अपेक्षा लेकर वस्तु के प्रतिपादन करने को नय कहते हैं। इसलिये जितने तरह के वचन होते हैं, उतने ही नय हो सकते हैं। नय के एक से लेकर संख्यात् भेद तक हो सकते हैं। सामान्य से नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ़ और एवंभूत ये सात भेद किये जाते हैं। न्याय-वैशेषिक केवल नैगमनय के, अद्वैतवादी और सांख्य केवल संग्रहनयके, चार्वाक केवल व्यवहारनयके, बौद्ध केवल ऋजुसूत्रनयके, और वैयाकरण केवल शब्दनय के मानने वाले हैं। प्रमाण सम्पूर्ण नय रूप होता है। नयवाक्यों में स्यात् शब्द लगाकर बोलने को प्रमाण कहते हैं। प्रत्यक्ष और परोक्ष के भेद से प्रमाण के दो भेद होते हैं।

९. जितने जीव व्यवहार राशि से मोक्ष जाते हैं, उतने ही जीव अनादि निगोद की अव्यवहार राशि से निकलकर व्यवहार राशि में आ जाते हैं, और यह अव्यवहार राशि आदिरहित है, इसलिये जीवों के सतत मोक्ष जाते रहने पर भी संसार जीवों से कभी खाली नहीं हो सकता।

१०. पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में जीवत्व की सिद्धि।

११. प्रत्येक दर्शन नयवाद से गर्भित होता है। जिस समय नय रूप दर्शन परस्पर निरपेक्ष भाव से वस्तु का प्रतिप्रादन करते हैं, उस समय ये दर्शन पर समय कहे जाते है। जिस प्रकार सम्पूर्ण नदियाँ एक समुद्र में जाकर मिलती है, उसी तरह अनेकांत दर्शन में सम्पूर्ण जैनेतर दर्शनों का समन्वय होता है, इसलिये जैनदर्शन स्वसमय है।

श्लोक ३०-३२— इन तीनों पद्यों में श्रमण भगवान् महावीर की स्तुति का उपसंहार करते हुए कहा है कि उनके द्वारा प्ररूपित अनेकान्तवादस्याद्वाद के माध्यम से ही विश्व का उद्धार / कल्याण हो सकता है और समदर्शी बनकर विश्वबन्धुत्व की भावना को उजागर किया जा सकता है।

स्याद्वादमंजरी का प्रचार और उपयोगिता :

प्रत्येक दर्शन के वैशिष्ट्य पूर्ण सिद्धान्तों का एवं अनेकान्त का संक्षेप में सरल होते हुए भी प्राञ्जल और स्पष्ट भाषा में वर्णन होने से इसका प्रचार-प्रसार अत्यधिक हुआ। आज भी श्वेताम्बर विद्वान एवं साधुगण न्याय-शास्त्र का अध्ययन करने के लिये प्रारम्भ में तर्कसंग्रह या प्रमाणनयतत्वालोकालंकार का अध्ययन करने के पश्चात् स्याद्वादमंजरी का ही अध्ययन करते हैं। इसके अध्ययन से न्याय-दर्शन में ही नहीं, अपितु अध्येता जैन-दर्शन का भी ज्ञाता बन जाता है।

स्याद्वादमंजरी न केवल अन्य दर्शनों के दूषणों का ही दिग्दर्शन कराती है, अपितु अनेकान्तवाद के आलोक में यथार्थस्वरूप को ग्रहण करने की प्रेरणा भी प्रदान करती है; जिससे ऊहापोह एकपक्षीय न रहकर तटस्थ्य भाव जागृत कर देता है। इसका यह उपादेयता/महत्ता आज के युग में सर्वग्राह्य बन सकती है, किन्तु आवश्यकता है मल्लिषेण की दृष्टि के प्रचार-प्रसार

की। आज के युग में इस ग्रन्थ की उपादेयता क्यों है? इसका अंकन करते हुए डॉ. आत्रेय ठीक ही लिखते है :—

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि इस पुस्तक का प्रचार खूब हो, और विशेषतः उन लोगों में हो जो जैनधर्मावलम्बी नहीं है। सत्य और उच्च भाव और विचार किसी एक जाति या मज़हब वालों की वस्तु नहीं है। इनपर मनुष्य मात्र का अधिकार है। मनुष्य मात्र को अनेकान्तवादी, स्याद्वादी और अहिंसावादी होने की आवश्यकता है। केवल दार्शनिक क्षेत्र में ही नहीं, धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में, विशेषतः इस समय— जब कि समस्त भूमण्डल की सभ्यता का एकीकरण हो रहा हो और सब देशों, जातियों और मतों के लोगों का सम्पर्क दिन पर दिन अधिक होता जा रहा है— इन ही सिद्धान्तों पर आरूढ़ होने से संसार का कल्याण हो सकता है। मनुष्य जीवन में कितना ही वांछनीय परिवर्तन हो जाय, यदि सभी मनुष्यों को प्रारम्भ से शिक्षा मिले कि सब ही मत सापेक्षक हैं; कोई भी मत सर्वथा सत्य अथवा असत्य नहीं है; पूर्ण सत्य में सब मतों का समन्वय होना चाहिये; और सबको दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये जैसा कि वे दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं। मैं तो इस दृष्टि के प्राप्त कर लेने को ही मनुष्य का सभ्य होना समझता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक पाठकों को इस प्रकार की दृष्टि प्राप्त करने में सहायक होगी। (स्याद्वादमंजरी : प्राक्कथन)

स्याद्वादमंजरी का अनुवाद :

डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, एम. ए. पी.एच.डी. ने इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद, शोधपूर्ण उपोद्घात और विवेचनात्मक विस्तृत ८ परिशिष्टों के साथ सुन्दरतम एवं पठनीय सम्पादन किया है। परिशिष्टों में समस्त दर्शनों की विशेषताओं का स्वरूप दिग्दर्शन तो वस्तुतः अध्येताओं के लिये अत्यन्त उपादेय बन गया है। इसका प्रथम संस्करण परम श्रुत प्रभावक मंडल बम्बई से सन् १९३३ में प्रकाशित हुआ था। यह संस्करण विस्तृत विवेचनात्मक एवं शोधपूर्ण होने के कारण सामान्य पाठकों की दृष्टि में विद्वद्योग्य बन गया है।

-------------X-------------

जिनवाणी

श्री हरिसत्य भट्टाचार्य

न्यायाचार्य कहते है कि, यदि आत्मा व्यापक पदार्थ न हो तो अनन्तदिग्देशवर्ती उपर्युक्त परमाणुओं के साथ उसका संयोग संभव नहीं और इस प्रकार का संयोग संभव न हो तो फिर शरीर की उत्पत्ति भी संभव नहीं। इसका उत्तर जैन इस प्रकार देते हैं कि, परमाणुसमूह को आकर्षित करने के लिये-मिलाने के लिए आत्मा को व्यापक पदार्थ होना ही चाहिए ऐसा नियम नहीं है चुंबन की ओर लोहा आकर्षित होता है, परन्तु इससे हम उसे व्यापक पदार्थ नहीं मान लेते। कदाचित् आप आपत्ति लेंगे कि, ऐसे आकर्षण से तो तीन लोक के परमाणु आत्मा की ओर खिंच आवेंगे, फिर शरीर का प्रमाण किस प्रकार बनेगा? यदि शरीर प्रमाण अनिश्चित ही रहे तो आपके व्यापकवाद में भी यही आपत्ति आएगी। समस्त परमाणुओं में व्याप्त आत्मा समस्त परमाणुओं को खींचे तो अन्ततः यही स्थिति होगी। यदि आप यह कहते हों कि अदृष्ट के प्रताप से शरीरोत्पत्ति के उपयोगी परमाणु ही आकर्षित होते हैं तो यही बात आत्मा की अव्यापकता को मानने वाले भी कहेंगे।

जैनसम्मत शरीरपरिमाणवाद के विषय में नैयायिक एक और आपत्ति करते हैं कि, यदि यह माना जाय कि आत्मा शरीर के प्रत्येक अवयव में प्रवेश करता है तो शरीर के समान आत्मा को भी सावयव मानना पड़ेगा। आत्मा सावयव हो तो वह एक कार्य हुआ और आत्मा कार्य हुआ तो फिर उसका कोई न कोई कारण भी अवश्य ही होना चाहिये। वह कारण विजातीय तो हो ही नहीं सकता, क्यों कि अनात्मा से आत्मा की उत्पत्ति नहीं हो सकती। सजातीय कारण मानना भी उचित नहीं है, क्योंकि सजातीय कारणों में भी आत्मत्व को मानना ही होगा, अन्यथा वह सजातीय कारण ही नहीं हो सकता। इसका सार यह हुआ कि आत्मसमूह से आत्मा की उत्पत्ति होती है।

नैयायिक इस बात को अयौक्तिक मत कहते हैं। एक ही शरीर में एकाधिक आत्माएं किस प्रकार कारणरूप से कार्य करते हैं, तो एक कारणरूप आत्मा का कार्य अन्य कारणरूप आत्मा के कार्य से किस प्रकार मेल खाएगा? ये दोनों कार्य किस प्रकार पूर्णतः एकत्व को प्राप्त होंगे? जिस प्रकार घट में अवयव होते हैं और अवयवों का संयोग नष्ट हो जाने से घट ही नष्ट हो गया ऐसा हम कहते हैं उसी प्रकार आत्मा के भी अवयव मानने पड़ेंगे और फिर आत्मा को भी विनाशशील मानना पड़ेगा।

जैनों का उत्तर यह है कि, हमारी जैन दृष्टि में आत्मा कथंचित् सावयव अथवा कार्य है; वह पूर्णरूप से सावयव और कार्यपदार्थ है ऐसा भी नहीं। यह नहीं कहा जा सकता है कि, जिस प्रकार घड़ा समान जातीय अवयवों से बनता है उसी प्रकार आत्मा भी सजातीय कारणों से निष्पन्न होता है। आप आत्मा को कार्य कहें तो कह सकते हैं, परन्तु कार्य शब्द का अर्थ आप क्या करते? पूर्व आकार का परित्याग करके दूसरे आकार में परिणमित होना द्रव्य का कार्यत्व है। भिन्न-भिन्न पर्याय-परिणति ही आत्मा का कार्यत्व है। इस दृष्टि से आत्मा कथंचित् अनित्य भी है एवं एक के पश्चात् एक पर्याय परिणत होने के कारण द्रव्यतः आत्मा अपरिवर्तित भी है। अतएव हम कह सकते हैं कि, आत्मा यद्यपि सावयव और कार्य है तथापि वह अविच्छिन्न, अविभाज्य और नित्य भी है।

आत्मा के शरीरपरिमाणत्व के विषय में नैयायिक कहते हैं कि, जीव को स्वदेहपरिमाण मानेगें तो उसे एक मूर्त्त पदार्थ मानना पड़ेगा। अब यदि आत्मा मूर्त पदार्थ हो तो शरीर में उसका अनुप्रवेश असंभव हो जायगा। एक मूर्त पदार्थ में अन्य मूर्त पदार्थ किस प्रकार प्रवेश कर सकता है? फिर तो आपको शरीर को निरात्मक ही मानना पड़ेगा।

एक और बात भी है: यदि आत्मा देहपरिमाण हो तो बाल शरीर के पश्चात् युवक शरीर के रूप में किस प्रकार परिणमित हो सकेगा? यदि आप कहें कि आत्मा बाल-शरीर-परिमाण का त्याग करके युवक-शरीर-परिमाण ग्रहण करता है तो शरीर के समान आत्मा भी अनित्य हो जायगा और यदि

यह कहा जाय कि बालक शरीर परिमाण का त्याग किए बिना ही आत्मा युवा-शरीर-परिमाण में परिणत हो जाता है तो इसे तो एक असंभव व्यापार ही कहना पड़ेगा, क्योंकि एक परिमाण का त्याग किए बिना अन्य परिमाण किस प्रकार ग्रहण किया जा सकता है? अन्ततो गत्वा न्यायाचार्य कहते हैं कि, जीव तनुपरिमाण हो तो शरीर का एकाध अंश खण्डित होनेपर आत्मा का भी किसी अंश में खण्डित होना मानना पड़ेगा।

जैन दार्शनिक इसका उत्तर देते हैं ; मूर्त के माने क्या? यदि मूर्त का अर्थ यह किया जाय कि आत्मा सर्व पदार्थों में अनुप्रविष्ट नहीं है, केवल स्वदेह-परिमाण ही है, तो जैन सिद्धान्त को इससे विरोध न होगा; परन्तु यदि आप मूर्त शब्द का अर्थ रूपादिमान करें तो फिर हमें उसका विरोध करना पड़ेगा। आत्मा के असर्वगत अर्थात् स्वदेहपरिमाण होने से उसका रूपवान अथवा मूर्त होना नियमेन आवश्यक नहीं है। मन असर्वगत है, परन्तु इससे उसे पूर्व पदार्थ नहीं माना जाता। आत्मा मूर्त पदार्थ नहीं है। जिस प्रकार शरीर में मन प्रविष्ट होता है उसी प्रकार आत्मा का प्रवेश भी समझना चाहिये। जैन कहते हैं कि, भस्मादि पदार्थों में जल आदि मूर्त पदार्थों का प्रवेश होना संभव है तो फिर शरीर में अमूर्त आत्मा का अनुप्रवेश असंभव कैसे हो सकता है? आत्मा युवक–शरीर परिमाण ग्रहण करने के समय बाल-शरीर-परिमाण का त्याग करता है, यह बात मानी जा सकती है, इसमें कुछ असंगति नहीं है। सांप अपने छोटे से फन को फैलाकर बड़ा बना देता है। उसी प्रकार आत्मा भी संकोच–विस्तार गुणके प्रताप से पृथक्-पृथक् समयों में पृथक्-पृथक् देहपरिमाण धारण कर सकता है। विभिन्न अवस्था अथवा पर्याय देखकर आत्मा को परिवर्तनशील कहें तो कह सकते हैं, और इसी दृष्टि से आत्मा अनित्य भी है। द्रव्य से इससे विपरीत ही बात कहनी होती है। अर्थात् द्रव्य से आत्मा अपरिवर्तित और नित्य है। शरीर-खंडन के बारे में नैयायिक जो आपत्ति लेते हैं उसके उत्तर में जैन कहते है कि शरीर खंडित होने से आत्मा खंडित नहीं होता, खंडित शरीरांश में आत्मा का प्रदेश विस्तार पाता है। खंडित शरीरांश में एक हद तक आत्मा का अस्तित्व न मानें तो उसमें (खंडित शरीरांश में) जो कम्पन देखा जाता है उसका कोई अन्य कारण नहीं

मिलता। खंडित अंश में कोई पृथक् आत्मा तो है नहीं, जो है वह देह में रहने वाले देहपरिमाण आत्मा का ही अंश है। शरीर के दो भागों में रहने पर भी आत्मा तो एक ही है। इस प्रकार युक्तिवाद से जैनाचार्य आत्मा के स्वदेह परिमाणत्व को भली भांति सिद्ध करते हैं।

न्यायमत का इस प्रकार खंडन करके जैन दार्शनिक युक्तिपूर्वक सिद्ध करते हैं कि आत्मा व्यापक नहीं बल्कि देहपरिमाण ही है। उनका अनुमान-प्रयोग भी यहां देखने लायक है। वे कहते हैं कि, आत्मा व्यापक नहीं है, क्योंकि वह चेतन है। व्यापक पदार्थ चेतन नहीं हो सकता। उदाहरण स्वरूप आकाश। आत्मा चेतन है इसलिये वह अव्यापक है। आत्मा अव्यापक है इसका अर्थ यही है वह देह परिमाण है; क्योंकि शरीर में उसका अस्तित्व देखा जाता है।

जैन सिद्धान्तानुसार जीव 'कम्मसंजुतो' अथवा पौद्गलिकादृष्टवान् है; पहिले इस बात की ओर संकेत किया जा चुका है। जो नास्तिक हैं—जो कर्मफल नहीं मानते, और परलोक भी नहीं मानते, वे भी जीव को अदृष्टवान कहकर अपने ही मत का खंडन करते हैं। कर्मके साथ फल का अच्छेद्य संबन्ध न माना जाय तो 'कृतप्रणाश' और 'अकृताभ्यागम' दोष आते हैं; यह बात भी पहिले कही जा चुकी है। सारांश यह कि परलोक माने बिना काम नहीं चल सकता। यदि कहा जाय कि परलोक प्रत्यक्ष दिखलाई नहीं देता, तो फिर उसे क्यों माना जाय? इसका समाधान यह है कि यह कहना ठीक नहीं है कि परलोक प्रत्यक्ष नहीं दीखता इसलिये उसे न मानना चाहिये। हम पितामह, प्रपितामह आदि अपने पूर्वजों को नहीं देख सकते हैं, किन्तु इससे क्या यह कह सकते हैं कि वे थे ही नहीं? कोई नास्तिक यह कहें कि किसी ने भी कभी परलोक नहीं देखा तो उसकी यह बात मानने योग्य नहीं है; क्योंकि वह कोई सर्वज्ञ नहीं है।

केवलज्ञानी पुरुष परलोक देख सकते हैं। जैन और आस्तिक भी यह बात मानते हैं।

नास्तिक यहां कहेंगे कि, परलोक हो तो उसका कुछ कारण भी तो होना चाहिये। वह कारण क्या है? परलोक का कारण अदृष्टको मानें तो 'अनवस्था'

दोष आ जायेगा। यदि यह कहो कि रागद्वेषादि के कारण परलोक है तो फिर आप निष्कर्म अवस्था के विषय में क्या कहेंगे? क्योंकि संसारीमात्र रागद्वेषवश होते हैं। यदि कहो कि हिंसादि क्रिया के लिये परलोक-व्यवस्था माननी ही चाहिये तो यह भी उचित नहीं है, क्योंकि कभी कभी क्रिया फलका व्यभिचार देखा जाता है हिंसादि पाप कर्म करने वाले धनधान्य के बड़े वैभव को भोगते देखे जाते हैं। दूसरी ओर सत्कर्म करने वाले सज्जन पुरुष को अति दीन दशा भोगनी पड़ती। इस प्रकार कर्मफल-व्यभिचार देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि कर्मफल है और अवश्य ही है। कर्मफल ही नहीं है तो फिर परलोक मानने की क्या आवश्यकता रही?

जैन दार्शनिकों ने इन तीनों आपत्तियों का उत्तर दिया है: वे नास्तिकों से कहते हैं कि, तुम्हारी बात अमुक अंश में, अमुक अपेक्षा से ठीक है। परन्तु इससे परलोक या अदृष्ट के सिद्धान्त में कोई दोष नहीं आता। जैन मानते हैं कि, जीव अनादि काल से कर्मसंयुक्त है। इसमें आप अनवस्था दोष बतलावे तो वह भूल है। रागद्वेषादि के कारण भवभ्रमण करना पड़ता है और इसी लिये निष्कर्मावस्था असंभव हो जाय, ऐसा आप कहें तो क्षणभर के लिये आपकी यह बात मान ली जा सकती है, परन्तु फिर भी परलोक तो आपको मानना ही पड़ेगा। वास्तविक बात यह है कि, जब तक जीव की मुक्ति नहीं होती तब तक वह रागद्वेष वशीभूत रहेगा और कर्म तथा कर्मफल के चक्र पर चढ़ेगा। पापी दिखते पुरुष का वैभव वास्तव में उसके पूर्वजन्म के पापकर्म का परिणाम है ऐसा आपको समझना चाहिये। यह भी निश्चित है कि, भविष्य में दुष्ट पुरुष की दुर्गति और सज्जन की उत्तम स्थिति होगी ही। बाहर से दीखनेवाले सुख दुःख को देखकर कर्मफल और परलोक से इन्कार करने का साहस न करना चाहिये।

जैन लोग आगम-प्रमाण को मानते हैं और परलोक की पुष्टि में उसका उपयोग भी करते हैं। शुभः पुण्यस्य अशुभः पापस्य अच्छे कर्म का फल भी अच्छा और बुरे कर्म का फल भी बुरा ही होगा, इस जिनवचन में किसी को तनिक भी शंका न करनी चाहिये। अदृष्ट के विषय में आनुमानिक प्रमाण

भी यथेष्ट मिल सकते हैं। एक गुणवती स्त्री के एक साथ दो पुत्रों का जन्म होता है। समय बीतने पर इन दोनों भाईयों के बल विद्या आदि में महदन्तर देखा जाता है। अदृष्टको न मानें तो बतलाइये इस विलक्षण का आप क्या स्पष्टीकरण करेंगे?

जैन मतानुसार अदृष्ट पुद्गलघटित है। अर्थात् दूसरे जन्म में आत्मा किस प्रकार का शरीर धारण करेगा वह उसके पूर्वजन्मार्जित तत्संश्लिष्ट कर्मपरमाणुओं से निर्दिष्ट होता है। आत्मा अदृष्टाधीन है। उसके पैरों में कर्मपुद्गल रूपी जंजीरें पड़ी हैं। नैयायिक अदृष्ट को आत्मा का विशेष गुण कहते हैं। सांख्यमतानुसार अदृष्ट प्रकृति के विकार के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। बौद्ध अदृष्ट को वासनास्वभाव कहते हैं। वेदान्ती उसे अविद्यारूप मानते हैं। जैन अदृष्ट को पौद्गलिक सिद्ध कहके इन सब मतों का परिहार कर देते हैं।

जीव अथवा आत्मा के विषय में जैन क्या मानते हैं इसका मैंने संक्षेप में वर्णन किया है। सांख्यादि मतों के साथ जैन मत कुछ अंशों में मिलता है तो कुछ अंशों में भिन्न है। इससे इतना तो अवश्य प्रतीत होता है कि, जैन दर्शन भारतवर्ष का एक अति प्राचीन—स्मरणातीत युग का—दर्शन है। यह बात बिल्कुल मानने लायक नहीं है कि, जैन दर्शन का प्रादुर्भाव बौद्ध युग के बाद में हुआ है, अथवा गौतमबुद्ध के समय का यह एक विचारप्रवाह है। न्याय, वेदान्तादि दार्शनिक मतों के साथ यदि जैन सिद्धान्तों की कुछ समानता प्रतीत होती हो, जैन दर्शन में किसी प्रकार की विशिष्टता दिखलाई देती हो तो हम सहज ही में यह अनुमान कर सकते हैं कि इतिहास के जिस विस्मृत युग में न्यायादि मतों का प्रचार हुआ है, उसी युग में जैन सिद्धान्तों का भी प्रचार हुआ होना चाहिये और इतिहास एवं पुरातत्व यही बात सिद्ध करता है।

क्रमशः

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

सिंहलाधिपति महाराजा शिलामेघ अपनी राजसभा के मध्य भाग में रत्नजड़ित सिंहासन पर बिराजमान थे। दो युवतियाँ तंवर ढाल रही थी। एक यौवना सुशोभित छत्र लेकर पीछे खड़ी थी। उनके दांये बांये युवराज, राजकुमार, महामात्य, आमात्य, सामंत, दंडनायक, कोषाध्यक्ष आदि एवं सामने की तरफ बड़े-बड़े सुभट योद्धा सभा को सुभोभित कर रहे थे। सेठ साहूकार भी आदम मान पूर्वक बैठे थे।

प्रसन्नवदन वाले राजा के साथ सभासद भी हास्य-विनोद की बातों में शरीक हुए थे। चारों ओर हल्का-फुल्का विनोदमय वातावरण था। इतने में प्रतिहारी ने प्रणाम कर विज्ञप्ति की कि कोई चरपुरुष दर्शन की अभिलाषा से आना चाहता है। कुछ अचंभे की खबर भी लाया है।

राजा इशारे से आने देने को कहा।

उसने आकर प्रणाम कर कहा–अन्नदाता मैं आपका चरपुरुष हूं और रत्नगिरि पर रहता हूँ। समुद्र की सीमा पर निगरानी रखना मेरा काम है, जो आपकी कृपा से कंई वर्षों से कर रहा हूँ। सुरक्षा आदि हेतु मैं सदा सावधान रहता हूं। यही कारण है कि समुद्र के ऊपर-अन्दर मैंने काफी अद्भुत वस्तुएं देखी हैं।

समुद्र का सौम्य-सुन्दर और रौद्र, भयानक-विकराल स्वरूप मैंने देखा हैं। इसकी तरंगो पर तैरते अनेक प्रकार के महान् जहाज, बड़े-बड़े व्यापारी और उनकी विपुल ऋद्धिसिद्धि मैंने अनेक बार निहारी है, मुझे उससे कभी आश्चर्य नहीं हुआ किन्तु उत्तर की ओर से आते हुए एक यानपात्र को देखकर मेरे अचरज का पार नहीं है। बेड़ा नहीं मानों तैरता हुआ विशाल जहाज है। आलीशान महल जैसा तो उसका मध्यभाग है। महाराज, कमान

और छज्जों से शोभते तिबारे वाला बाह्य भाग है। सारी सामग्री से भरे बड़े-बड़े कई कमरे हैं। उसमें सभी सुविधा व सुभग शोभा।

मैं इसके पीछे-पीछे ही रत्नागिरि से आ रहा हूँ। कुछ देर पूर्व ही यह जहाज अपने सागर किनारे पर आया और लंगर डाला गया है। धनपती जैसे सेठजी उसमें से उतरे हैं। उन्होंने उदारता से याचकों को दान दिया। वे तैयार होकर यहाँ आने वाले हैं किन्तु यह खबर आप को पहुँचाने मैं पहले आया। प्रणाम! सिंहलेश्वर महाराजा शिलामेघ की जय हो। आज्ञा दीजिये।

बहुत बढ़िया, सीमापाल। तुम्हारी दक्षता एवं कार्यपटुता जाहिर है। हमें प्रसन्नता हुई। दरिया जैसे दिलेर व्यापारी ही समुद्र की छाती पर तैर सकते और सफल व्यापार कर सकते हैं।

लो, राजा ने पारितोषिक देते हुए कहा सुख से जाओ। और उसके जाने के कुछ समय बाद बिजया प्रतिहारी ने प्रणाम पूर्वक राजा को निवेदन किया कि-

महाराज! ऋषभदत्त नाम के एक प्रौढ़प्रतिभ व्यापारी आपके दर्शन को उपस्थित होना चाहते हैं। क्या आज्ञा है?

शीघ्र भेजो भद्रे !

जो आज्ञा महाराज ! कहकर वह चली गयी। आस्थान मंडप के मुख्य द्वार से गौरवपूर्ण प्रतिभा वाले सार्थवाह ऋषभदत्त ने प्रवेश किया।

प्रशांत और प्रतापी, समुन्नत और विनम्र, समृद्धिमान और सज्जन, मानों साक्षात् धर्म के दूत आये।

गौरवर्ण, प्रसन्नमुद्रा, बड़ी-बड़ी आंखे, भव्य ललाट, चौड़ा सीना, लंबे बाहू और चान्दी के मुलायम तार जैसे लंबे सफेद बाल।

अति ऐश्वर्यशाली के योग्य वस्त्र, गले में पन्ने व मणि माणिक के कंठे आदि अलंकार, शानदार पगड़ी पहने सार्थवाह-सेठजी के आते ही राजसभा में बहार आ गई सारी सभा पुलकित हो गई। सेठ ने बहतरीन अंदाज से राजा को प्रणाम किया। आत्मीयता से कुशल क्षेम पूछे। राजा ने भी उन्हें गौरवपूर्ण आसन पर बैठाया, तांबूल से सत्कार किया और कुशलक्षेम पूछा।

कहिये सेठजी, आप कहाँ के रहनेवाले हैं? अभी कहाँ से पधारे हैं? और आपका नाम क्या हैं।

जी महाराज! यहाँ से उत्तर दिग्विभाग में भारतवर्ष में लाट नाम का हराभरा देश हैं। तीर्थंकर भगवान् मुनिसुव्रत प्रभु की चरणरेणु से पावन भृगुकच्छ (भरूच) नाम का अतिरमणिय नगर है। समुद्र किनारे का विकसित बन्दरगाह और नर्मदा नामक महानदी के तीर पर बसा हुआ यह शहर व्यापार का अच्छा केन्द्र है। हरियाली वनस्पति और ऊंची-ऊंची वृक्षों से नयनरम्य। उछलता गरजता सागर और चौड़े पटवाली इतराती-इठलाती समुद्र में समा जाती नर्मदा।

यह सब देखते ही बनता है। जहाँ बड़े-बड़े जहाजों से समुद्र द्वारा एवं लाख-लाख पोतों से स्थल मार्ग द्वारा माल सामान का ढेर लगा रहता है। जहाँ बड़े-बड़े व्यापारी सदा क्रय-विक्रय में लगे रहते हैं। उस अलबेले-समृद्ध और धर्मिष्ठ नगर भृगुकच्छ (भरूच) का मैं निवासी हूँ। और अभी मैं वहीं से आ रहा हूँ। मेरा नाम ऋषभदत्त है।

वाह, बहुत अच्छी बात है। आपका नाम भी उत्तम है, जैसे आप हैं। वैसे ही भृगुकच्छ का नाम भी काफी प्रसिद्ध है। बहुत बड़ा नगर होगा?

जी, हाँ महाराजा! अच्छा लम्बा चौड़ा। नगर की रचना भी बड़ी अद्‍भुत! प्रकार (कोट) परिखा से उदार और धार्मिक। श्री मुनिसुव्रत भगवान् की चरणरेणु से पावन होने के कारण पावन, महान और प्रसिद्ध। फिर समुद्र यात्रा का बन्दरगाह भी है।

वाह आनन्द की बात की आपने। आप धंधा क्या करते हैं?

अरे हाँ, वह तो मैं बताना ही भूल गया। हम लोग सार्थवाह कहलाते है। स्थल-जल मार्ग पर हम व्यवसाय करते हैं। सामान्य लोग इलायची से लेकर कस्तूरी, सामान्य कपड़े से लेकर चीनांशुक, ज्यादा क्या कहें? हाथी, घोड़े भी राज परिवार की शोभा और शोभा यात्रा के योग्य हम रखते और बेचते हैं। दो उत्तम आपकी खिदमत में लाया हूँ भेंट करने। जो राज द्वार की शोभा बढ़ाने वाले हैं। बाहिर चौक में ही बाँध कर आया हूँ। वो सुन्दर है और मंगल रूप भी है।

वाह, वाह! बहुत बढ़िया, आपकी भावना का हम आदर करते हैं- आपकी भावपूर्ण भेंट स्वीकार करते हैं। कहाँ के हैं ये घोड़े?

जी? पारस, तुर्क और गजनी के अश्वों से भी बढ़चढ़ ने वाले अति उत्तम और जातिवान ये सैंधव अश्व हैं। सुन्दर और बलवान होने के अलावा ये श्रेष्ठ लक्षण वाले होने के कारण अपने स्वामी की सदा उन्नति, कीर्ति और मंगल कामना की वृद्धि करने वाले भी हैं।

राजा यह सब जानकर आनंदित हुए। राजा की जिज्ञासा के संतोष के लिये ऋषभदत्त सेठ ने अश्व सम्बन्धी बोध रसप्रद जानकारी दी। उत्तम, मध्यम, जघन्य, घोड़ों के लक्षण और प्रभाव समझाये। इतने में राजकुमारी सुदर्शना का आने का समय हो गया।

आज दस साल के बाद राज परिवार की प्राण प्यारी राजदुलारी सुदर्शना स्वयं का अध्ययन काल पूर्ण कर राजमहल में वापस आ रही थी। राजा कभी से उसी के बारे में सोच रहे थे। आज सुदर्शना कितनी बड़ी हो गई होगी? ज्ञान, कला, और यौवन! कैसा सुभग संगम। कल ही की बात घुटनों से चलती थी। सारा महल उसकी किलकारी से निखर उठता था। कल वह सजधज कर डोली में बैठाई जायगी और वह किसी राज घराने की कुल लक्ष्मी बन बिदा लेगी। सेठजी के आगमन के पूर्व राजा ऐसे विचारों में खोये थे-इसमें अश्व सम्बन्धी मुग्ध बातों ने सब भुला दिया।

इतने में प्रतिहारी ने खबर दी राजकुमारी अपने कलाचार्य शिक्षा गुरू के साथ आ रही है।

कुछ ही क्षणों में अप्सरा जैसी सुन्दर राजकुमारी सुदर्शना ने उपाध्याय के साथ प्रवेश किया। सभी की नजरे सुदर्शना पर ठहर गई। कैसा मुग्ध यौवन? शची या रम्भा? रति या उर्वशी? सभी सभा मानों उसी को देखने सोचने लगी। उपाध्याय ने राजा को आशीर्वचन कह उचित आसन लिया। राजकुमारी राजा के चरणों में सहर्ष प्रणाम कर अवनत हुई। राजा ने उसे उठा कर बाजू में बैठाया। पुत्री के शरीर में वय ने किया परिवर्तन राजा ने जाना-जो सूचक था।

एक बड़ा और आवश्यक कार्य पूर्ण कर लेने का संतोष कुमारी के मुंह पर साफ दिखता था। राजा ने कुशल क्षेप पूछे किन्तु हर्षावेश में वह गद्गद् हो गई, इस कारण कुछ भी बोल नहीं पाई। पुत्री की अति प्रसन्नता से खुश राजा ने उसे पूछा कि बेटी! ज्ञान कला का अभिमान तो नहीं है न?

नहीं, नहीं पिताजी! प्रत्यक्ष रूप से ही धर्म, विनय और योग्यता का नाश करने वाले अहंकार को कौन समझदार आदर देगा।?

मुँह में से फूल बिखरने के आभास करने वाले शब्दों को सब सुनकर प्रभावित हुए । पुत्री की प्रज्ञा एवं चातुर्य से राजा को संतोष हुआ। राजा ने और भी प्रश्न पहेलिका आदि पूछे, जिसके सत्य, संतोषप्रद, विस्मयजनक उत्तर सुनकर सभी अचरज पाये। सेठ ऋषभदत्त सोचने लगे कि यह कन्या सरस्वती है या लक्ष्मी? क्योंकि दोनों के ही विलक्षण लक्षण इसमें दिख रहे हैं।

सारी सभा में राजकुमारी की चर्चा एवं प्रशंसा होने लगी। कलाचार्य का सम्मान होने के पश्चात् सुदर्शना की महल में जाने की तैयारी हो ही रही थी कि राजवैद्य आये। उन्हें सेठ ऋषभदत्त के पास में स्थान मिला। वे उत्तम प्रकार के सूंठ, पीपल आदि औषध, गर्म, मसाले का उत्तम सामान अर्पण के लिए साथ लाये थे। अपनी आदत के अनुसार जावित्री आदि के टुकड़े करने लगे-उसकी महीन रज उड़कर वहाँ फैलते-बाजू में बैठे सेठजी के श्वास में जाने लगी-परिणामस्वरूप सेठजी को जोर से छींक आई। हमेशा के अभ्यास के मुताबिक छींक के साथ ही वे नमो अरिहंताणं बोले। उन्होंने यह अच्छी आदर डाल रखी थी कि उठते, बैठते, लेटते, जाते, आते या छींक जंभाई, खांखी आदि आते जाते वे अवश्य नवकार महामंत्र का प्रथम पद नमो अरिहंताणं बोलते।

नमो अरिहंताणं ये शब्द कान में पड़ते ही सभ्रांत बनी हुई कुमारी सोचने लगी। ये कौन से शब्द हैं? ये परिचित और आत्मीय लगते हैं। ये कहीं सुने समझे हैं। ये सेठजी ने किसी महान भगवान् विशेष को नमस्कार किया प्रतीत होता है। हाँ, हाँ, कुछ याद तो आ रहे हैं। हाँ, मधुर और गंभीर शब्द। चील मत घबरा, बोल नमो अरिहंताणं....... हाँ........ हाँ नमो इस विचार में उसका लक्ष्य आबद्ध हो गया। उसकी तीव्र धारणास्मृति अतीत की

गहराई में उतरने व विस्मृति के पटल को भेदने लगी। कुछ ही क्षणों में तो वह पूर्व की अनुभूति का स्मरणानुभव करने लगी। उसे जातिस्मरण ज्ञान हो आया। जिससे बीते हुए भव का अनुभव ताजा और स्वच्छ हो स्मृति पट पर अंकित हो उठा। उसके अंग प्रत्यंग कंपन करने लगे। कोई उसे सम्हाले उससे पहले तो वह बेहोश हो सिंहासन से लुढ़क गई।

अचानक ही राजपुत्री को गिरी देख राजा व्याकुल हो उठे। क्षण पूर्व ही स्वस्थ दिखती राजकुमारी को अचेत देख राजा ने उसे उठाने की कोशिश की लेकिन उसे मुर्दे की तरह निश्चेष्ट देख राजा को ऐसा आघात लगा कि वे स्वयं मूर्च्छित हो गिर पड़े। सारी सभा व्यग्र हो उठी। महल में हलचल मच गयी। कुछ ही देर में रानी एवं राजकुमार आदि भी वहाँ आ पहुँचे और आक्रंदन करने लगे। परिजन भी रोने लगे और हाहाकार मच गया।

मूलभूत तकलीफ को समझे बिना ऐसी अफवाह उड़ी कि किसी बलवान शत्रु ने सिंहलद्वीप पर धावा बोल दिया है। परिणाम यह आया कि राजपुरुषों ने सुरक्षा की कड़ी तैयारियाँ की। इतना ही नहीं किन्तु कोतवाल ने यह गड़बड़ देखकर सुरक्षा की चेतावनी हेतु आपातकालीन नगाड़ा बजा दिया। जिससे सारे नगर में भय का वातावरण फैल गया। फटाफट दुकानें बंद होने लगी। माल सामान के ढेर शीघ्र ही उठा लिये गये। लोग अपने धन वैभव को गाड़ने व छुपाने लगे। सब चिंतित हो गये, तो कोई हिम्मत देने लगे। सारे नगर में अंधाधुंधी फैल गयी।

सेनापति ने सैन्य को तैयार होने का आदेश दिया। हाथी, घोड़े, रथ वगैरह तैयार होने लगे। शूरवीर शस्त्रों को लेकर सज्ज होने लगें, तो कायर लोग बीमार पड़ गये। सारी नगरी भयाक्रांत हो उठी। इधर राजमहल में सुन्दरी ने आकर सबको धीरज रखने के लिये कहा। वैद्य ने शीतल जल व शीतोपचार से राजा को स्वस्थ किया। सुदर्शना को चन्दन लेप कर हवा डाली जा रही थी। वह गहरी नींद में कोई दुःस्वप्न देखती हो इस तरह कांपती थी। उसके चारों तरफ सब चिंतित हो बैठे थे। महल में तो शांति थी किन्तु नगर की अवस्था देखकर राजा ने सेनापति को बुलवाया और कहा राजकुमारी की मूर्च्छा के सिवा और कोई भय का कारण नहीं है, अतः नगर को भय मुक्ति

के समाचार दिलाओ। सेनापति के जाने के बाद थोड़ी देर में सुदर्शना ने आंखे खोलीं।

बेटी, क्या हुआ? बहन तुझे अचानक क्या हो गया ? सुदर्शना, अब तू कैसी है? इत्यादि प्रश्न पिता, माता, भाई आदि एक साथ पूछने लगे।

राजकुमारी की आंखों से मानो पीड़ा बरस रही थी और वह भय से कांप रही थी। बड़ी मुश्किल से वह उठी। उसे आसन पर बैठाया गया। राजा, रानी आदि उसके आस-पास बैठ गये। पीठ और सिर पर हाथ फेरते हुए पूछने लगे की अब तुझे कैसा लग रहा है? तुझे क्या हुआ था?

गहरें चिंतन में उतरी हुई और अपलक नजरों से वह सार्थवाह के सामने देखने लगी। व्यथित माता-पिता, भाई, एवं सहेली आदि को उत्तर या सांत्वना देना तो दूर रहा उनके सामने देखा तक नहीं।

स्वस्थ हो सुदर्शना ने श्रेष्ठी को पूछा, ओ धर्मबंधु! जिनमत कुशल! मैंने सुना कि आप भृगुकच्छ से पधारे हैं?

सेठजी ने कहा हाँ राजकुमारी! मैं वहीं का रहने वाला हूँ। सेठ को आश्चर्य हुआ।

सुदर्शना बोली बहुत आनन्द। वहाँ निर्वाण मार्ग की साधना में रत परमोपकारी और कामगजेन्द्र को जीतने में केसरीसिंह जैसे महाभाग मुनि भगवंत सुख शाता में बिराजते हैं?

सुदर्शना की ऐसी अद्भुत बातें सुनकर सबको बड़ी हैरानी हुई। सार्थवाह भी सोच में पड़ गये कि उन मुनिराजों को एवं उनकी महानता को यह कहाँ से जाने? कहाँ भृगुकच्छ और कहाँ सिंहल? थोड़ा विचार करने के पश्चात् उन्होंने अनुमान किया कि राजकुमारी को जाति स्मरण ज्ञान हुआ मालुम होता है। नहीं तो इतना विवेक और गांभीर्य अचानक कहाँ से आये? उन्होंने कहा।

हाँ, राजकुमारी! वहाँ वे सभी मुनिश्रेप्ठ सुखदाता में हैं और आत्म साधना में लीन रहते हैं। मुझे लगता है, सुदर्शना! कि इस धर्म सामग्रीहीन द्वीप में, समृद्ध किन्तु आराधना रहित इस महालय में भी तुझे धर्मबोध हुआ-किसी भी तरह धर्म मार्ग की स्मृति पुनः हो पाई ऐसा मुझे लगता है–यह एक उत्तम संकेत है, शुभ का सूचक है।

अचंभे और कुतूहल में डूबे राज परिवार एवं अन्य उपस्थित लोगों को कुछ भी समझ में नहीं आया। बिना जान-पहचान के राजकुमारी सौदागर के साथ ऐसी अटपटी बाते क्यों कर रही है? इससे उन्हें हैरानी भी हुई। आखिर व्याकुल हो राजा पूछ बैठे।

सुदर्शना! क्या बकवास कर रही हो? होश हवास है कि नहीं? तूने कब देखा ये भृगुकच्छ? फिर ये कौन से मुनियों की बाते कर रही हो! सेठ जी से तुझे क्या सम्बन्ध! जैसे तू इन्हें युगों से पहचानती हो ऐसा तेरा व्यवहार कितना विचित्र है, तेरा दिमाग ठिकाने तो है?

हाँ, पिताजी! मैं बिलकुल होश में हूँ और तन्दुरस्त भी।

तो फिर हम तुझे कब से पूछ रहे हैं कि तुझे क्या हुआ? क्या तकलीफ है? सब कितने परेशान हैं और तू है कि जबाव देना तो दूर रहा सामने भी नहीं देखती। ये सार्थपति बेचारे शांति से बैठे हैं उनसे जबरदस्ती बोल रही है।

मैं आपको क्या बताऊँ पिताजी, वह भृगुकच्छ और मुनिराजों की बात? कैसी आनन्दमय और पावन! कैसी नदी और हवा! कैसा वनखंड और बरगद का पेड़? कैसी असहाय मैं और परम कृपालु मुनिराज की कल्याणी वाणी? सारी दास्तान कितनी अद्‌भुत और सजीव! थोड़ी देर सी बेला में मैंने कितना जान लिया? ओह...... ओह........

यह सुन सब ही चकित हो फटीं आँखों से सुदर्शना को ताकने लगे—जैसे उसमें कोई भूत-प्रेत ने प्रवेश कर लिया हो। कोई तो हिला-हिला कर देखते थे कि यह होश में है या नहीं, कहीं पागल तो नहीं हो गई? फिर भी अधिकांश लोग तो कौतुक होने से उसकी बात सुनने में उत्कंठित हो उठे।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism — Price : Rs.
10. Smt. Lata Bothra- The Harmony Within — Price : Rs. 100.00
11. Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira — Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari BeganiPrice : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2230-8105/2139,

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2454-5650

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029,
Ph: (S) 2464-1186, (R) 2475-3133

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2230 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-8181-4/8780 (R) 2249-1243

SUVGYA BOYED
340, Mill Road, Apt. # 1407
Etobicolse, onterio m9 Cly8
416-622-5583

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2230-2074/8958 (D) 2230-3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2257-1697/7059 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2287-6516
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2287-9277, 2287-2826
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2237-6255

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230-0871/9372, 3022937172
(M) 9330926774

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 3288-8088/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2210-3253
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Dusaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - 700 00
Phone : 3258-2284/9831030188

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamond
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes

INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES

40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.

Freight & Chartering Brokers

12-B, N. S. Road; Kolkata - 1

PH : 2230 5059 / 2230 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-

STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS

13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

SHIV KUMAR JAIN

"Mineral House"

27A, Camac Street, Kolkata - 700 016

Ph: (Off) 2287-7880, 2287-8663, Res) 2287-8128, 2287-9546

MAHENDRA TATER

Block No. 2, 3rd Floor,

45/4A, Chakraberia Road (S)

Kolkata - 700 025

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.

Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)

2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001

Ph: 2230-7162, 2231-5540, Fax : (91)(33)2220 6400

e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

WITH BEST WISHES
जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है वह एक को जानता है।

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2230 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230 3142 (O) 2475 0995,
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

BIKASH CHHAJER
Director
SITAL GROUP OF COMPANIES
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001
Phone : 2242-9265, 2210-9228, Fax : (033) 2242-9265
Mobile : 98310 22577, E-mail : finncon@vsnl.net

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room.No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016 ·
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50⁰ C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

BC JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXX. No. 3
25th June 2006

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 070/2004-06
R.N.I. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225